Dr•Navin Chandra Sharma
Assistant Professor
Dept of psychology
Maharaja Bahadur Ram Ran Vijay Prasad Singh College Ara

Date; 11/02/2026

Class: P.G Semester - 4th

Clinical Psychology,

Topic :-

Related psychodynamic approaches

फ्रायड द्वारा प्रतिपादित विचारों का अन्य मनोवैज्ञानिकों द्वारा संशोध किया गया। संशोधन करने वालों में इरिकसना (Erikson), एडलर (Adler), ओटो रैंक (Otto Rank), चुंग (Jung) हॉनी (Horney), फ्रोम (Fromm), सुल्लीभान (Sulivan), अन्ना फ्रायड (Anna Frend), फेमर बेन (Faifbain) तथा कोहट (Kohut) आदि प्रमुख हैं। इन लोगों द्वारा प्रस्तावित संशोध न में निम्नांकित प्रवृत्तियाँ (trends) स्पष्ट रूप से दिखता है-

(1)अभिप्रेरण में अचेतन मूल प्रवृति **(uneonseion inpsict)** की महत्वपूर्ण भूमिका के प्रति असंतोष तथा इस विन्दु पर फ्रायड के विचारों से असहमति ।

(ii) मानव व्यवहार पर सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों के प्रभावों पर अधिक बल दिया जाना।

(iii) इन मनोवैज्ञानिकों द्वारा व्यक्तित्व के चेतन पहलुओं पर अधिक बल दिया जाना।

(iv) इन मनोवैज्ञानिकों द्वारा यह विचार व्यक्त किया जाना किं व्यक्त्वि विकास बाल्यावस्था में ही पूरा नहीं होता है वल्कि वयस्कावस्था में इसका कार्य चलता रहता है।

कैरन हॉर्नी (Karen Horney), इरिक फ्रोम (Erich Fromm), हैरी स्टैट सुलीभान (Harry Staek sullivan) तथा इरिक इरिक्सन (Erik Erikson) ने फ्रायड द्वारा व्यक्तित्व विकास में सिर्फ जैविक कारकों को महत्वपूर्ण वतलाना एक आंशिक दृस्टिकोण कहा। इन लोगों का मत है कि व्यक्तित्व विकास में सामाजिक सांस्कृतिक कारकों की अनदेखी करना अनुचित होगा। विशेष कर इरिकसन ने व्यक्तिव विकास के लिए आठ मनोसामाजिक अवस्था (Psycho-Social Stages) का वर्णन किया है जो फ्रायड के पाँच मनोलैंगिक अवस्थाओं (Psychosexual stages) से अधिक विस्तृत एवं महव्वपूर्ण है। इन आठ अवस्थाओं में व्यक्ति द्वारा अन्य व्यक्तियों के प्रति की गयी अन्तःक्रिया को उन्मुखता को महत्वपूर्ण बतलाया गया है। इरिक्सन का मत है कि मनोसामाजिक विकास के प्रत्येक अवस्था में व्यक्ति में एक सामाजिक संकट (Social crisis) की उत्पत्ति होती है। जिसका यदि.
पूर्वक समाधान कर लेता है तो व्यक्ति में धनात्मक परिणाम होते हैं और वह अगली अवस्था के सामाजिक संकट के
साथ ठीक ढंग से निबट पाता है। यदि वह इस संकट से ठीक ढंग से नहीं निबट पाता है तो इससे उसके व्यक्तित्व का उत्तरविकास (later development) अवरूद्ध हो जाता है।

अलफ्रेड एडलर (Alfred Adler) के विचार भी यहाँ उल्लेखनीय हैं। एडलर के अनुसार व्यक्तित्व विकास का सबसे महत्वपूर्ण कारक मूलप्रवृत्ति (instinct) न होकर हीनता (inferiority) वतलाया गया है। एडलर ने व्यक्तित्व विकास में सामाजिक सांस्कृति तथा लक्ष्यउन्मुखी गत्याव्यकता (goal-oriented dynamies) पर अधिक बल डाला है। उन्होंने पूरे परिवार को व्यक्तित्व विकास के लिए महत्वपूर्ण बतलाया और कहा कि परिवार में व्यक्ति के जन्मक्रम (birthorder) का प्रभाव व्यक्तित्व विकास पर पड़ता है। एडलर के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति अपनी जिन्दगी की शुरूआत एक लाचार एवं हीन (inferior) स्थिति से करता है। वह अपनी इस हीनता के भाव को दूर करने के लिए कुछ पूरक व्यवहार (Compensatory behaviour) करता है जिसमें वह श्रेष्ठता प्राप्त करने की भरपूर कोशिष करता है। जिन तरीकों से वह श्रेष्ठता प्राप्त करने की कोशिश करता है, उससे उसमें एक विशेष "जीवनशैली" (Style of life) की उत्पत्ति होती है। अगर जीवन शैली समायोजी हुआ तो इससे व्यक्ति में सामाजिक अभिरूचि (Social interest) सहयोग, साहस आदि का विकास होता है। इसमें से सामाजिक अभिरूचि को एडलर ने काफी महत्व दिया है उनके अनुसार सामाजिक अभिरूचि मानसिक स्वास्थ्य का बैरोमीटर होता है। (Social interest is the barometer of mental health)। अगर जीवन शैली कुसमायोजी (maladapsive) हुआ तो इससे व्यक्ति में निर्भरता, दूसरों के प्रति अनादर तथा वास्तविकता के प्रति विकृत दृस्टिकोण (distorted viahpoiesm) आदि विकसित हो जाते हैं।

एडलर की तरह ओटो रैंक (otto Rank) भी प्रायड द्वारा यौन एवं आक्रमकता (agreement) को मानव व्यवहार का प्रमुख आधार की बात मानने से अस्वीकृत कर दिया और इसके बदले में बच्चों के मौलिक निर्भरता (Dependency) एवं उसमें धनात्मक वृद्धि के जन्मजात अन्तः शक्ति (Potential growth) को महत्वपूर्ण माना। जन्म आघात (birth trauma) को उन्होंने एक महत्वपूर्ण संप्रत्यय वतलाया क्योंकि उनके अनुसार इसमें मुज (fesus) अपने निस्क्रिय एवं पूर्णतः निर्भर वातावरण (dependent environment) को छोड़ कर अचानक एक ऐसे वातावरण में आता है जिसमें काफी अस्त व्यसतता होती है तथा जिसें स्वतंत्रता अधिक एवं निर्भरता कम होती है। सचमुच में जन्म व्यक्ति में एक ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करता है जो आश्रित रहने की इच्छा एवं पूर्ण स्वतंत्रता की ओर दैहिक एवं मनोवैज्ञानिक ढंग से बढ़ने की जन्मजात मानवीय प्रवृत्ति के वीच एक तरह का संघर्ष विकसित होता है। ओटो रैंक का विचार था कि यदि व्यक्ति इस संघर्ष को तीक ढंग से दूर नहीं कर पाता है तो उसके व्यवहार में असामान्यता एवं विकृति (distorsion) उत्पन्न हो जाता है।

कुछ मनावैज्ञानिकों जैसे फेयरबेन (Fairbairn), का नाम मशहूर है, ने फ्रेयड के मौलिक विचार धारा से इतना भिन्न विचार व्यक्ति के मौलिक विचार धारा से इतना भिन्न विचार व्यक्त किया कि इन्हें मनोवज्ञिान में नये नाम 'वस्तु संबंध सिद्धान्त बादी' (object relation theorist) के नाम से जाना जाने लगा। इनलोगों का मत यह है कि उपाहं (Id) तथा अहें (ego) का स्वरूप महत्वपूर्ण नहीं होता है वल्कि महत्वपूर्ण वह व्स्तु (object) होता है जिसके प्रति वच्चा उपाहं एवं अहं आवेगों को दिखाता है। और जिसे बच्चे अपने व्यक्तित्व में सम्मिलित कर लिया होता है। यहाँ 'वस्तु' से तात्पर्य वच्चा के वातावरण के महत्वपूर्ण व्यक्ति (प्रायः माता-पिता) के सांकेतिक प्रतिनिधित्व (symbolic representation) से होता है। बाद में वही संकेत या वस्तु से वच्चा द्वारा किये जाने वाले व्यवहार या अन्तःक्रिया से उत्पन्न अनुभूति (experience) प्रभावित होती है।